

'सुजलम 2.0' धूसर जल पुनर्चक्रण परियोजना

प्रलिस के लयः

धूसर जल, SBM-G फेज II, MGNREGS, सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल, जल जीवन मशिन, जल शक्ति अभियान ।

मेन्स के लयः

जल संकट का मुद्दा और उठाए जाने वाले कदम ।

चर्चा में क्यों?

[वशिव जल दविस \(22 मारच\)](#) के अवसर पर जल शक्ति मंत्रालय ने धूसर जल तथा रसोई, स्नान और कपड़े धोने से या अपवाह के जल के पुनः उपयोग के लयि एक देशव्यापी परयोजना शुरू की ।

धूसर जल:

- धूसर जल को घरेलू प्रकरयिओं (जैसे बरतन धोना, कपड़े धोना और स्नान करना) से उत्पन्न अपशषिट जल के रूप में परभाषति कयिा जाता है ।
- धूसर जल में हानिकारक बैक्टीरयिा और यहाँ तक क मृदा एवं भूजल को दूषति करने वाले अपशषिट भी हो सकते हैं ।
- अभी तक भारत के पास शहरी और ग्रामीण कषेत्रों में धूसर जल के प्रबंधन एवं उपयोग के लयि एक केंद्रीयकृत नीतगित ढाँचा नहीं है । हालाँकि अपशषिट जल के उपचार हेतु कुछ दशिया-नरिदेश मौजूद हैं ।
 - उदाहरण के लयि- **केंद्रीय सार्वजनकि स्वास्थय और पर्यावरण इंजीनयरिग संगठन (CPHEEO)** ने उपचारति पानी के लयि अनुमत नरिवहन मानकों को नरिदषिट कयिा है; जैसे- कृषि एवं बागवानी में उपचारति अपशषिट जल का उपयोग (एमओएचयूए, 2012) ।
 - **केंद्रीय भूजल बोरड (CGWB)** नरिदेश देता है क उपचारति अपशषिट जल को मानकों को पूरा करने और मौजूदा भूजल के अनुकूल होने के बाद कृत्रमि भूजल पुनर्भरण के स्रोत के रूप में इस्तेमाल कयिा जा सकता है ।

'सुजलम 2.0' ग्रे-वाटर रसिाइकलगि प्रोजेक्ट:

- **परचियः**
 - यह परयोजना पंचायतघर, स्वास्थय सुवधियाओं, स्कूलों, **आँगनवाडी केंद्रों (AWCs)**, सामुदायकि केंद्रों और अन्य सरकारी संस्थानों में संस्थागत स्तर के ग्रे-वाटर प्रबंधन परसिंपत्तयिों के नरिमाण पर ध्यान केंद्रति करेगी ।
 - व्यक्तगित एवं सामुदायकि ग्रे-वाटर प्रबंधन परसिंपत्तयिों के नरिमाण को प्रोत्साहति कयिा जाएगा ।
 - अगस्त 2021 में शुरू कयिा गए 'सुजलम 1.0' अभयान के तहत सभी राज्यों एवं स्थानीय समुदायों की सकरयि भागीदारी से बड़ी सफलता हासलि की गई ।
 - पूरे देश में घरेलू और सामुदायकि स्तर पर 10 लाख से अधिक सोख्ता गड्डे बनाए गए ।
- **परयोजना हेतु वतितपोषण:**
 - ग्रे-वाटर प्रबंधन हेतु गतवधियों को नषिपादति करने के लयि वतितपोषण, **स्वच्छ भारत मशिन ग्रामीण चरण-II** या **15वें वतित आयोग** से जुड़े अनुदान या **मनरेगा** के माध्यम से या सभी के अभसिरण के माध्यम से प्राप्त कयिा जाएगा ।

॥



‘ग्रे-वाटर’ संकट को संबोधित करने की आवश्यकता:

- ताज़े पानी की बचत से घरेलू पानी के बर्तनों को काफी कम किया जा सकता है, साथ ही इससे सार्वजनिक जल आपूर्तिको कम करने में भी मदद मिलेगी।
- सीवर या साइट पर उपचार प्रणालियों में प्रवेश करने वाले अपशिष्ट जल की मात्रा को कम करना।
- विश्व भर में 2.2 अरब लोग जल संकट का सामना कर रहे हैं।
 - [सतत विकास लक्ष्य 6](#) का उद्देश्य सुरक्षित और स्वच्छ पेयजल एवं स्वच्छता के लिये सार्वभौमिक पहुँच प्रदान करना है।
- अनुमान है कि भारत में प्रतिदिन 31 अरब लीटर ग्रे-वाटर उत्पन्न होता है।
- [सुजलम 2.0 अभियान](#) के तहत 6 लाख से अधिक गाँवों में [ठोस एवं तरल अपशिष्ट प्रबंधन](#) पर जोर दिया जाएगा।
- वर्तमान के संदर्भ में ग्रामीण घरों से बहुत अधिक पानी का प्रवाह होगा।
 - अगस्त, 2019 में शुरू होने के बाद से [जल जीवन मशिन](#) के तहत 6 करोड़ नल के पानी के कनेक्शन प्रदान किये गए हैं।
 - देश में कुल 9.24 करोड़ घरों में नल के माध्यम से पानी उपलब्ध कराया जाता है।

संबंधित पहल:

- भारत:
 - [जल शक्ति अभियान](#):
 - इसे पानी की कमी वाले जिलों को शामिल करने के लिये वर्ष 2019 में शुरू किया गया है, वर्ष 2021 में इसका विस्तार ग्रामीण और शहरी जिलों तक किया गया है।
 - [अटल भुजल योजना](#):
 - इसे वर्ष 2019 में शुरू किया गया है जसि 7 राज्यों के चुनदा क्षेत्रों में लागू किया जा रहा है, इसके तहत लोग अपनी जल सुरक्षा योजना तैयार करते हैं जसिमें यह विवरण दिया जाता है कि उन्हें पानी कैसे मिला रहा है, कतिना पानी खर्च किया जा रहा है, कसि प्रकार की जल संरक्षण पद्धतिलागू की गई है और कोई इसका उपयोग कैसे नियंत्रित कर सकता है।
- वैश्विक स्तर पर:
 - ग्लोबल वाटर सिस्टम प्रोजेक्ट, जसि वर्ष 2003 में अर्थ सिस्टम साइंस पार्टनरशिप (Earth System Science Partnership-ESSP) और ग्लोबल एन्वायरनमेंटल चेंज (Global Environmental Change- GEC) कार्यक्रम की संयुक्त पहल के रूप में लॉन्च किया गया था, ताज़े जल के मानव-प्रेरित परिवर्तन और इसके प्रभाव के बारे में वैश्विक चर्चा का प्रतीक है।

आगे की राह

- जल संरक्षण हेतु सतत व्यवहार प्रथाओं को विकसित करने की आवश्यकता है।
- केंद्र सरकार को पेयजल के दूषित होने की समस्या से निपटने हेतु तत्काल आधार पर जल शोधन या रिवर्स ऑस्मोसिस (Reverse Osmosis-RO) संयंत्रों की स्थापना के लिये उपाय करना चाहिये।

स्रोत: पी.आई.बी.